

श्री अरविंद सोसाइटी द्वारा 17 दिसंबर, 2005 को नोएडा में आयोजित द्वि-दिवसीय सम्मेलन में पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रमेश चन्द्रजी लाहोटी का मुख्य अतिथि के रूप में दिया गया उद्बोधन,

.....

श्री अरविंद सोसाइटी हिन्दी क्षेत्र के द्वि-दिवसीय वार्षिक सम्मेलन में सम्मिलित होते हुए मुझे आत्मिक आनन्द की अनुभूति हो रही है। मैं इस सम्मेलन की सर्वांगीण श्रेष्ठतम सफलता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ और अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ। यह सम्मेलन समयोचित है, समय की मांग और राष्ट्र की आवश्यकता के अनुरूप है। इस सम्मेलन के माध्यम से जिस प्रकाश की किरण का प्रसार होगा उसका आमंत्रण आज व्याप्त अंधकार दे रहा है। इस सम्मेलन की विड्वय सूची ही संकेत देती है कि तीन चरणों की यात्रा 'मनुष्य की अवधारणा' से प्रारम्भ होकर 'राष्ट्र की अवधारणा' तक पहुंचना चाहती है और यह संपूर्ण यात्रा श्री अरविन्द के आलोक में संपादित होगी। यह सम्मेलन यदि एक वाक्य में कहूं तो, राष्ट्र के प्रति नमन है, राष्ट्र भांडा के प्रति नमन है और उस परम सत्ता के प्रति नमन है जो श्री अरविन्द के अनुसार, सूक्ष्म रूप में, प्रत्येक व्यक्ति में समाहित है। इस समयोचित, श्रेष्ठ, सकारात्मक आयोजन के लिए श्री अरविन्द सोसाइटी साधुवाद का पात्र है।

श्री मां और श्री अरविन्द की साधना और चिन्तन ने जिस विवेक युक्त विचारधारा का प्राकट्य किया और जो अरविन्द साहित्य के रूप में सुलभ है, मैं उसका एक जिज्ञासु पाठक मात्र हूँ। श्री मां और श्री अरविन्द के प्रेमी साधकों के बीच, विचार व्यक्त करते हुए, मुझे अपनी क्षुद्रता का अहसास है अस्तु जो समझ पाया हूँ उसे आपके समक्ष विनम्रता के साथ प्रस्तुत करने का यत्न कर रहा हूँ।

श्री अरविन्द ने न तो किसी धर्म को जन्म दिया, न किसी पन्थ को। उनका चिन्तन व्यवहारिक और प्रायोगिक दर्शन है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ है। उसमें पाप और पुण्य की अवधारणा नहीं है, रूढ़िवादिता के लिए स्थान नहीं है और न ही ऐसा कोई विचार या सिद्धांत है जो बहुधा विवादों को जन्म देता है या जिस पर कोई मतभेद हो सकता है। वह केवल इस आत्मविश्वास को जागृत करता है कि प्रत्येक

प्राणी में परम सत्ता का अस्तित्व है, उसे अन्तर्मुखी होकर पहचानने की, योग साधना द्वारा उसे जागृत कर परिष्कृत करने की, और लोक कल्याण के मार्ग पर मोड़ देने की आवश्यकता है। राष्ट्र के उत्थान में विष्व के उत्थान का सूत्र है और समष्टि के कल्याण से व्यक्ति के कल्याण के सूत्र जुड़े हैं। श्री मां ने कहा कि संसार से मुंह मोड़ना मोक्ष का मार्ग नहीं है; जो निर्वाण चाहते हैं वे सांसारिक कर्मों को ही अवसर देते हैं कि वे मुक्ति का मार्ग बन जाएं।

श्री अरविन्द की जीवन कथा प्रेरणादायी है। माता-पिता की प्रेरणा और आज्ञा को शिरोधार्य कर उनने विदेश में शिक्षा प्राप्त की। पाष्चात्य शिक्षा उन्हें बाहर से मिली किन्तु स्वःप्रेरणा से उनने संस्कृत एवं अन्य कई संस्कारों का पोषण किया। युवावस्था में ही उनके व्यक्तित्व से क्रान्ति की चिंगारियां फूट पड़ीं। वन्देमातरम् के जनघोष के साथ उन्होंने भारत माता को विदेशी चंगुल से मुक्त कराने का संकल्प लिया। प्रकट है कि उन्हें कारागार भी जाना पड़ा। गीता को अपने मुखारविन्द से निःसृत करने वाले भगवान श्री कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ था। श्री अरविन्द ने 1908.09 में, प्रथम कारावास में गीता की योग साधना की, गीता उन्हें सिद्ध हुई और भगवत् दर्शन हुआ। गीता के प्रथम साक्षात्कार में उन्हें लगा था कि यह संसार मिथ्या है, नष्पर है। किन्तु, द्वितीय कारावास में उनकी चेतना और परिष्कृत हुई। उन्हें अनुभूति हुई कि यह संसार की एक चेतना है, सभी प्राणियों में ईश्वर का सूक्ष्म अस्तित्व है और मनुष्य की क्रियाओं का संचालन परमस्ती से आदेशित है इसलिए वे भी आध्यात्मिक उपलब्धि का साधन बन सकती हैं। यह रूपान्तरण योग साधना के द्वारा संभव है। मनुष्य के सारे कर्मों का प्रयोजन प्रकाश, सत्य, शान्ति और आनन्द का सृजन कर प्राणीमात्र के हितार्थ होना चाहिए।

भारतीय संविधान में जिस धर्म-निरपेक्ष पंथ-निरपेक्ष राज्य शासन और व्यवस्था की अपेक्षा की गई है उसका अवतरण अरविन्द के दर्शन से सहज संभाव्य हैं। श्री अरविन्द की शिक्षा और साधना पद्धति विलक्षण किन्तु प्रासंगिक है। उन्हीं के शब्दों-धर्म किसी एक धर्म विषेष्ट को उन्नत करना, अथवा प्राचीन धर्मों को एक साथ मिला देना या कोई नया धर्म प्रचलित करना उनका उद्देश्य नहीं है। उनके संपूर्ण दर्शन का सार या निचोड़ है कि योग साधना के माध्यम से, व्यक्ति अपना आंतरिक

आत्वविकास करें, और अपने ही अन्दर की मानसिक चेतना से ऐसी उच्चतर, आध्यात्मिक और अतिमानसिक चेतना को विकसित करें जो मानन-प्रकृति को रूपान्तरित कर उसे दिव्य बना दे। इसी में जीवन की सर्वांग परिपूर्णता है इसी में भागवत चेतना से मिलना है। इसी में नष्वरता से ईष्वरत्व का प्रदीपन और परिवर्तन का रहस्य छिपा है।

मैं अपनी बात समाप्त करूंगा और आपकी अनुमति लूंगा, श्रीअरविन्द सोसाइटी, इस सम्मेलन के आयोजक महानुभाव, विषेड्डकर श्री विजयजी पोद्दार का, और आप सबका आभार ज्ञापित करते हुए इस सम्मेलन की सफलता के लिए श्री अरविन्द का दिव्य सफलता के लिए श्री अरविन्द का दिव्य सन्देश उन्हीं के शब्दों में, उन्हीं के महाकाव्य शसावित्रीश से उद्धृत करते हुए —

Nature shall live to manifest secret God,
The spirit shall take up the human play,
The earthly life became the life divine.’

प्रकृति रहेगी बनी व्यंजन गुह्य ईश की,
परमात्मा नायक होगा मानव गतिविधि का,
पार्थिक जीवन दिव्य सुजीवन बन जायेगा।

दिव्य संदेश का रूपांतरण तो संभव नहीं — किन्तु ये 4 पंक्तियां उसी भाव को शब्द देती प्रतीत होती हैं। सरल भाषा में (प्रथम दो पंक्तियों के रचियता से क्षमा याचना के साथ) —

कोई मज़हब* ऐसा भी चलाया जाए
जिसमें इन्सान को सिर्फ इन्सान बनाया जाए
इन्सां में छिपी सूक्ष्मसत्ता का हो परम सत्ता से मिलन
अरविन्द के आलोक में उस राह पर चलें और चलाया जाए।

““““

‘ मज़हब धर्म नहीं, जीवन-पद्धति

* मज़हब अर्थात् धर्म नहीं, जीवन-पद्धति